विवाह संस्कार

विधि - मंडप प्रवेश से पहले स्नान से अलंकार पर्यन्त सभी सम्बन्धियों के निश्चित कार्यों की पहचान वाना और उनका निर्वाह करवाना । उपस्थित जनों को आसन ग्रहण करने के लिए निवेदन । वर-कन्या अलग-२ अपने -२ माता पिता के साथ बैठेंगे ।

शुभ कामना - भूमि स्वर्गताम यातु, मनुष्यों यातुदेवताम्। धर्मो सफलताम यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ।
शान्ति कामना - (संलग्न)
मंगल गीत - (संलग्न)
स्वागत - मानवीयता पूर्ण विवाह संस्कार में आप सब की भागीदारी के लिए आपका स्वागत है।

मानवीय विवाह संस्कार का सार - संक्षेप

सम्बन्ध सहित परस्पर परिचय, उभय पक्ष की स्वीकृति, हस्तांजली, माल्यार्पण, प्रतिज्ञा, कर्तव्यों व दायित्वों का बोध, जीवन का लक्ष्य । प्रसन्नता को अभिव्यक्त करने के लिए संगीत, वाद्य, यज्ञ, आर्शीवाद भोज आदि।

प्रबोधन - मानवीय संस्कार का स्वरूप व व्याख्या, विवाह का औचित्य, विवाह संस्कार की महिमा एवं परम आवश्यकता। मानव क्या है ? मानवीयता क्या है?

उभय पक्ष की सहमति -

उभयपक्ष (दोनों के माता -पिता) की सहमति से विवाह सम्पन्न हो रहा है । वर - कन्या का एक दूसरे के प्रति समर्पित रहने का उल्लेख कराना ! जिसके आधार पर प्रतिज्ञा होगी ।

परिचय - (अ) विवाह मंडप में सम्बन्ध सहित परस्पर परिचय।

वर-वधू के माता पिता -दादी-दादा, मामी-मामा, नानी-नाना, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, मौसा-मौसी , बुवा-फूफा भाभी-भइया, बहन-बहनोई, मित्र, गुरु व बच्चों, भाई-बहन आदि का परिचय। वर-वधू का शैक्षणिक व्यक्तित्व, जागृति क्रम ।

उभयपक्ष की स्वीकृति, संकल्प एवं हस्तांजली

विधि - वर-वधू के माता पिता उन उन के पास आये । माता,पिता व वर-वधू खड़े हो जाये ।

दोनों के माता पिता से बुलवाये -

हम चि० (वर का नाम) के माता पिता, हम आयु० (कन्या का नाम) के माता पिता शिशु काल से ममता पूर्वक तन,मन धन से इनका पोषण, संरक्षण एवं सुशीलता का संर्वधन करते आये हैं । इनके ज्ञानार्जन को समृद्ध करने के लिए शिक्षा आदि को वहन करते आये हैं। हमें प्रसन्नता है कि ये दोनों मानव परिवार परम्परा के दायित्व को निर्वाह करने योग्य हो गये हैं। हम और हमारा सम्पूर्ण परिवार स्नेही जनों सहित इस दाम्पत्य सम्बन्ध से पूर्णतया शुभाकांक्षा सहित सहमत है। चि० (वर का नाम) व आयु० (कन्या का नाम) मानवीयता के संरक्षण में सहायक हो । यह नव दम्पत्ति शरीर यात्रा पर्यन्त

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मानवीयता, देव मानवीयता एवं दिव्य मानवीयता पूर्वक जी कर मानव परम्परा में अपने प्रमाण प्रस्तुत करे । ऐसी हमारी मंगल कामना एवं शुभाशीष है।

हम आज दिनांक ..... माह ..... वर्ष ..... दिन .....
तदनुसार विक्रम सम्वत ..... पक्ष ..... तिथि .....
सौर मास ..... प्रविष्टे नक्षत्र ..... में समय .....
स्थान..... ग्राम/नगर..... , जनपद.....
प्रदेश..... देश..... में आयोजित इस विवाह मंडप में आप सब की साक्षी में इन दोनों को दाम्पत्य सूत्र में बाधंते हैं एवं विश्वास दिलाते है कि अब हम इन दोनों को सम्मिलित रूप से पुत्र-पुत्री के रूप में स्वीकार करते हैं हमारा आशीर्वाद निरन्तर इनके साथ बना रहेगा। वर-वधू माता पिता के चरण स्पर्श करे ।

माता -पिता को प्रणाम अर्थात समस्त मानव परम्परा (इतिहास) को प्रणाम अर्थात माता पिता के साथ ही - दादा-दादी, नाना-नानी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, मौसी-मौसा, मामी-मामा, बुवा-फूफा, भइया- भाभा, बहन-बहनोई सभी को अभिवादन किया ।

माता-पिता का आशीर्वाद -

चि० .....एवं आयु०.....की यह युगल जोड़ी दीर्घायु हो, स्वस्थ्य रहे , तेजस्वी रहे, ओजस्वी रहे और हर दिन, हर पल आपका कार्य - व्यवहार मानवता के लिए , जीवन तृप्ति के लिए चरितार्थ होता रहे। समाधान, समृद्धि, अभय ओर सह अस्तित्व को आप प्रमाणित करें, ऐसा हमारा आशीष है ।

माल्यार्पण -

वर के भाई-बहन-सखा तथा कन्या के भाई-बहन एवं सखी उन-२ को माला अर्पित करें । वर-वधू खड़े हो जायें । पहले वधू - वर के गले में माला अर्पित करेगी । फिर वर वधू के गले में माला अर्पित करेगा। बैठ जायें।

समस्त मंडप सहित - वन्दना, कामना और मंगलगीत (संलग्न)

वर द्वारा प्रतिज्ञा

मैं (वर का नाम) आज दिनांक (शेष पूर्ववत) में आयोजित इस विवाह मंडप में आप सब की साक्षी में दाम्पत्य सम्बन्ध को जानकर और मानकर स्वेच्छा पूर्वक सहर्ष प्रतिज्ञा करता हूँ कि -

१. अपने परिवार जनों एवं बन्धु-बांधवों द्वारा समर्थित (वधू का नाम) को शरीर यात्रा पर्यन्त अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करता हूँ और स्वयं को (वधू का नाम) के पति रूप में प्रस्तुत करता रहूँगा।
२. मैं (वर का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ सह अस्तित्व का निर्वाह निरन्तर करता रहूँगा।
३. मैं (वर का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ परस्पर पूरकता का निर्वाह निरन्तर करता रहूँगा।
४. मैं (वर का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ मानवीय सम्बन्ध का निरन्तर निर्वाह करता रहॅगा।
५. मैं (वर का नाम) अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ -२ मानवीय व्यवस्था के लिए जीऊंगा ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वधू द्वारा प्रतिज्ञा

मैं (वधू का नाम) आज दिनांक (शेष पूर्ववत) में आयोजित इस विवाह मंडप में आप सब की साक्षी में दाम्पत्य सम्बन्ध को जानकर व मानकर स्वेच्छा पूर्वक सहर्ष प्रतिज्ञा करती हूँ कि -

१. अपने परिवारजनों एवं बन्धु बांधवों द्वारा समर्थित (वर का नाम) को शरीर यात्रा पर्यन्त अपने पति के रूप में स्वीकार करती हूँ और स्वयं को (वर का नाम) की पत्नी के रूप में प्रस्तुत करती रहूँगी ।

२. मैं (वधू का नाम) जीवन शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपने पति (वर का नाम) के साथ सहअस्तित्व का निर्वाह निरन्तर करती रहूँगी।

३. मैं (वधू का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपने पति (वर का नाम) के साथ परस्पर पूरकता का निर्वाह निरन्तर करती रहूँगी।

४. मैं (वधू का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपने पति (वर का नाम) के साथ मानवीय सम्बन्ध का निरन्तर निर्वाह करती रहूँगी।

५. मैं (वधू का नाम) अपने पति (वर का नाम) के साथ-२ मानवीय व्यवस्था के लिए जीऊँगी ।

वर-वधू द्वारा सम्मिलित प्रतिज्ञा -

१. हम दम्पत्ति प्रतिज्ञा करते है कि शरीर यात्रा पर्यन्त मानव कुल को जागृति पथ में प्रशस्त करने के कार्य में भागीदार रहेंगे।

२. हमं दोनों मानवीयता पूर्ण मर्यादाओं का पालन करेंगे । जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ का संदुपयोग एवं सुरक्षा करते हुए मानवीयता पूर्ण आचरण में जीयेंगे।

उपस्थित जन समूह द्वारा प्रतिज्ञा

हम आज दिनांक (शेष पूर्ववत) में आयोजित इस विवाह मडंप में सहर्ष स्वेच्छा पूर्वक प्रतिज्ञा करते हैं कि -

१. चि० ..... एवं आयु० ..... को पति-पत्नी के रूप में स्वीकार करते है ।

२. मानवीयता पूर्ण आचरण द्वारा पति-पत्नी के सम्बन्ध को निर्वाह करने के लिए हम चि०..... एवं आयु० ..... को संरक्षण एवं प्रोत्साहन निरन्तर प्रदान करते रहेंगे ।

प्रतिज्ञा के बाद मंगल गीत - (संलग्न)

प्रबोधन- प्रतिज्ञा की महिमा , व्याख्या मानव का उद्देश्य , दायित्व एवं कर्तव्य का बोध भले प्रकार से कराना । विवाह संस्कार पूर्ण हुआ, इसकी घोषणा ।

आशीर्वाद -

बुर्जुगों द्वारा - आप दोनों (वर-वधु) दीर्घायु हों , स्वस्थ रहें , तेजस्वी हों, ओजस्वी हों और हर दिन, हर पल आपका कार्य - व्यवहार मानवता के लिए , जीवन तृप्ति के लिए चरितार्थ होता रहे। समृद्धि, समाधान,अभय और सहअस्तित्व सदा बना रहे।

समान आयु वर्ग द्वारा - आपका दाम्पत्य सम्बन्ध हम लोगों को प्रेरक हो, मार्गदर्शक हो, सार्थक हो एवं सुखद, सुन्दर समाधान पूर्ण हो ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

छोटी आयु वर्ग द्वारा - आप हमारे मार्ग दर्शक रहेंगे, पथ प्रर्दशक रहेंगे, शुभचिन्तक रहेंगे साथ ही सहयोग करने वाले रहेंगे। हम सब आप जैसे ही सुखद, सुन्दर, समाधान पूर्ण पद्धति से जीना चाहते हैं ।

इसके पश्चात सभी वर-वधू के ऊपर पुष्प वर्षा करें।

इस प्रसन्नता को अभिव्यक्त करने के लिए सर्वमान्य उपक्रम यथा - यज्ञ, नृत्य, गायन एवं भोज आदि करते हैं।

यज्ञ के तीन बिन्दू -

अ) मन की प्रसन्नता को अभिव्यक्त करने के लिए ।

ब) सामाजिकता को अभिव्यक्त करने के लिए ।

स) वातावरण को सुगन्धित बनाने के लिए ।

अन्त में सम्मिलित उच्चारण - अर्पित करते हैं - अर्पित है ।

१. व्यापक शून्यावकाश में स्थित अनन्त ब्रह्माण्डों में से एक ब्रह्माण्ड के अंगभूत इस समृद्ध पृथ्वी पर , वर्तमान में पाये जाने वाले मानव अत्यन्त सौभाग्य शाली हैं क्योंकि उनको विकास एवं जागृति का अध्ययन एवं अनुभव करने का स्वर्णिम अवसर व साधन प्राप्त हैं। इस प्रसन्नता में, से, के लिए हम यह आहूति अर्पित करते हैं-अर्पित है।

२. इस समृद्ध पृथ्वी पर पदार्थावस्था, प्राणावस्था एवं जीवावस्था के साथ हम सब को अपने में स्वयं स्फूर्त्त होने वाले कर्तव्यों व दायित्वों को पूरा करने का अवसर मिला है। इस प्रसन्नता में, से, के लिए यह आहूति अर्पित करते है-अर्पित है।

३. इस समृद्ध पृथ्वी पर अपने माता पिता एवं बन्धु - बांधवों के साथ सुरक्षित एवं संरक्षित रहकर कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का बोध हमें प्राप्त हुआ है। इस प्रसन्नता में, से, के लिए हम यह आहूति अर्पित करते हैं - अर्पित है।

४. हमें इस समृद्ध पृथ्वी पर शुभ, सुन्दर व समाधान पूर्ण पद्धति, प्रणाली एवं नीति से पारंगत होने का शुभ अवसर मिला है। इसे इस पीढ़ी एवं अगली पीढ़ियों में प्रमाणित करने में पूर्ण विश्वास हुआ हैं। इस प्रसन्नता में, से, के लिए हम यह आहूति अर्पित करते हैं - अर्पित है।

५. हम इस समृद्ध पृथ्वी पर सुदुर विगत से प्राप्त न्याय, धर्म एवं सत्य कामना की स्मृति पाकर उपकारान्वित हुए हैं इसे स्वीकारते हुए कृतज्ञता को अभिव्यक्त करने की प्रसन्नता में, से के लिए हम इस आहूति को अर्पित करते हैं-अर्पित है।

वर- वधू द्वारा

६. हमें मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान के रूप में अस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान एवं मानवीयता पूर्ण आचरण में जागृत होने का अवसर मिला है। इस प्रसन्नता में, से, के लिए इस आहूति को अर्पित करते हैं - अर्पित है।

७. इस समृद्ध पृथ्वी पर मानव कुल के अंगभूत हमें सह अस्तित्व में प्रमाणित होने का तथा विवेक व विज्ञान में समृद्ध होने का अवसर हमें मिला है। इस प्रसन्नता में, से , के लिए हम इस आहूति को अर्पित करते हैं - अर्पित है।

८. इस समृद्ध पृथ्वी पर सार्वभौम व्यवस्था में जागृत होने और भागीदार होने का अवसर हमें प्राप्त हुआ है। इस प्रसन्नता में, से, के लिए इस आहूति को अर्पित करते हैं- अर्पित है ।

९. इस समृद्ध पृथ्वी पर अखण्ड समाज तथा सार्वभौम व्यवस्था सहज ही समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व को प्रमाणित करने का हमें अवसर मिला है। इस प्रसन्नता में, से, के लिए यह आहूति अर्पित करते हैं - अर्पित है।

१०. पूर्णाहूति - व्यापक शून्यावकाश में स्थित अनन्त ब्रह्माण्डों में से एक ब्रह्माण्ड के अंगभूत इस समृद्ध पृथ्वी पर , वर्तमान में पाये जाने वाले मानव अत्यन्त सौभाग्य शाली हैं क्योंकि उनको विकास एवं जागृति का अध्ययन एवं अनुभव करने का स्वर्णिम अवसर व साधन प्राप्त हैं। इस प्रसन्नता में, से, के लिए हम यह आहूति अर्पित करते हैं-अर्पित है।

मंगलगीत एवं शान्ति कामना (संलग्न) ।

वर-वधू एवं माता-पिता आचार्य (पुरोहित) का प्रणाम करें ।

वर-वधू एवं माता-पिता अर्थात मानव परम्परा में ज्ञान (विद्या) को प्रणाम ~~किया~~ करें।

अखंड मानव समाज की आशीर्वाद - गुरू ~~एवं मानव परम्परा~~ (इतिहास) द्वारा ।

इस मानवीयता पूर्ण विवाह संस्कार में भागीदारी निर्वाह करने का हमें अवसर प्राप्त हुआ इसके लिए हमें कृतज्ञता एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । हम सब सफलता के लिए शुभाशीष देते हैं ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal